B-II
L-28
Ancient history

⇒ गुप्तचर व्यवस्था (गुप्तकाल)

→ गुप्तकाल में दूत / पुलिस कर्मचारी को भाट/भट कहा जाता था।

⇒ राजस्व के स्रोत

भू-राजस्व → भाग (1/6)

स्वेच्छा से दिया गया → भोग

एक प्रकार का भूमि कर → उद्रंग

भूमिकर → उपरिकर

भूतावात प्रत्यय → विदेशी वस्तुओं पर लगने वाला कर

शुल्क → बिक्री कर

कर

- नगद → हिरण्य
- अनाज → मेय

} दोनों रूपों में

- जनसामान्य में मुद्रा का प्रयोग जितना कुषाणों के समय में होता था – उतना नहीं था।

↳ फाह्यान → वस्तु विनिमय or कौड़ियों का प्रयोग

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

⇒ व्यापार

→ विदेशी व्यापार में गिरावट आई
↳ कुमारगुप्त का मंदसौर अभिलेख
↓
पट्टबाय श्रेणी (रेशम बुनकर) लाट प्रदेश छोड़कर मालवा में आ गई थी

→ व्यापार की दृष्टि से गुप्त काल में महत्वपूर्ण परिवर्तन
↓
- रोमन व्यापार का पतन
- तीनों प्रमुख बन्दरगाहों का पतन (दक्षिण में)

→ Replace → बैजेन्टाइन + चीन के साथ व्यापार शुरू } निर्यात < रेशम, मसाले

→ ताम्रलिप्ति / तामलुक बन्दरगाह सक्रीय हुआ
→ महाजनी में गिरावट
→ श्रेणी बैंकों का कार्य करने लगी

⇒ आयात → मदिरा, बहुमूल्य रत्न या पत्थर, औषधियां

→ अक्षयनीवि → ऐसा भूमिदान जिससे लगातार अनवरत भू-राजस्व की प्राप्ति होती रहे।
↓
शुरूआत कुषाण काल में → लोकप्रिय → गुप्तकाल

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

⇒ धर्म

→ वैष्णव धर्म अत्यधिक लोकप्रिय हुआ

→ हिन्दू धर्म के तीन महत्वपूर्ण पक्ष विकसित हुए-

1- मूर्ति उपासना का केन्द्र बनी

2- यज्ञ का स्थान उपासना ने लिया

3- वैष्णव तथा शैव धर्म का समन्वय हुआ

- गुप्तशासक वैष्णव धर्म के अनुयायी थे

⇓

परन्तु → स्कन्द गुप्त के सिक्कों पर बैल (नंदी की) आकृति तथा कुमारगुप्त के सिक्कों पर - मयूर पर आरूढ कार्तिकेय (स्कन्द) की प्रतिमा उत्कीर्ण है।

↓

शैव धर्म का प्रतीक

- आर्यदेव, असंग, वसुबन्धु, मैत्रेयनाथ, दिग्नाग प्रमुख बौद्ध आचार्य थे। योगाचार दर्शन का विकास इसी काल में हुआ।

- कहौम अभिलेख के अनुसार स्कंदगुप्त के समय भद्र ने 5 जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां स्थापित करायीं।

→ व्यापारी वर्ग में लोकप्रीय धर्म → जैन धर्म

KGS IAS

⇒ संगम युग

(लगभग - 300 ई.पू. — 300 ई.)

अर्थ - मिलन
↓
कवियों का मिलन (पाण्ड्य शासक द्वारा)

3 संगम

	अध्यक्ष	
प्रथम →	अगस्त्य ऋषि	(मदुरै)
द्वितीय →	तोलकाप्पियर	(कपाटपुरम)
तृतीय →	नक्कीरर	(मदुरै)

⇒ संगम (मिलन)
⇓
परिणाम → संगम साहित्य

1 - तोलकाप्पियर → तमिल व्याकरण की पहली पुस्तक
└ रचनाकार → तोलकाप्पियर

2 - शिलप्पादिकारम → इलंगो अदिगल

3 - जीवक चिन्तामणि (शीतग) → ~~सीतलै सत्तनार~~ → तिरुत्तक्कदेवर

4 - मणिमेखलै → सीतलै सत्तनार

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

३ राजवंशों की जानकारी

चेर
⇓
सबसे ज्यादा उल्लेख मिलता है।
प्रतीक – धनुष
शेनगुट्टुवन (लालचेर)
↳ जहाजी बेडा
↳ कौमार्य देवी की उपासना से संबंधित पत्नी पूजा का प्रारम्भ
↓
पितृात्मक समाज का प्रतीक

चोल
⇓
→ बाघ
राजधानी - उत्तरी मनलूर or उरैयूर or तंजावुर
⇓
प्रसिद्ध शासक
↳ करिकाल
↓
कावेरीपत्तन को राजधानी बनाया

पाण्ड्य
⇓
→ कार्प (मछली)
→ हेराक्ल. की पुत्री का शासन था (मेगास्थनीज)
- मोतियों के लिए प्रसिद्ध था
→ राजधानी - मदुरै

KGS IAS

⇒ राजनीतिक व्यवस्था

क्षेत्रीय वर्गीकरण
1- कुरांजि – पहाड़ी क्षेत्र
2- नीयल – समुद्री क्षेत्र
3- मरुदम – कृषि क्षेत्र
4- मुल्लै – जंगल
5- पलै – निर्जन स्थान

→ राजनीतिक व्यवस्था राजतंत्रात्मक होने के साथ-साथ वंशानुगत होती थी

⇒ सेनापति → इनाडि

⇒ सामाजिक व्यवस्था
↓
समाज में कई वर्ग थे -

1. अरसर शासक
2. अंडनर ब्राह्मण
3. वैनिगर - व्यापारी
4. वेल्लाल - किसान

- समाज में दास प्रथा, सती प्रथा विद्यमान थी।

⇒ धर्म → मरुगन की पूजा होती थी
↳ सुब्रह्मण्यम
↳ स्कन्द कार्तिकेय
*↳ इन्द्र की भी पूजा होती थी - पुहार

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform